पद ४

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

श्रीसदुरुचा अगाध महिमा। वर्णिन मी किती हो जन हो। काव्य रचना थकली हो।।ध्रु.।। प्रकृति सौंदर्य दृश्य मनोहर। नीलवर्ण अंबर निर्मल मधुजल रचना रचली हो प्रभुची अद्भुत ही कृति हो जन हो।।१।। दृष्टी आश्रित सृष्टी कीटक। स्मरती प्रभुसी निशीदिनी प्रतिपल। स्मरता संकटी हो तत्क्षणी। प्रगटे विविध रूपे हो।।२।। सर्व सुखाचे हे मन सागर। भाव भवन भक्तीचे आगर। पुण्य पाप नदीचे हो संगम। प्रभु पाद स्थळी हो जन हो।।३।। मी तरी केवल अज्ञान बालक। अल्पमती किती स्तवीन पामर। दीन सिद्ध प्रार्थि हो प्रभु तुज। स्वीकरण्या सेवा हो जन हो।।४।।